शोध परिधि ISSN-2349-9575
साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका

कविवर गोपाल दास नीरज के फिल्मी गीतों में सामाजिक समरसता : एक अनुशीलन

डॉ. जीत सिंह
स.प्रो. हिन्दी
कु0मा0रा0म0 महाविद्यालय, बादलपुर

डॉ. मन्जु चौहान
स.प्रो. हिन्दी
देवता महाविद्यालय, मोरना(धामपुर)

शोध सारांश

कवि का हृदय त्रिकाल और त्रिभुवन का संगम है जहाँ उसका बचपन प्रलय नटखट बालक के समान उत्पात मचाता है। उसका यौवन गगन के गान, समीकरण के हास और सागर के रोदन से प्रति ध्वनित करता है। तीसरे पड़ाव में कवि जल और थल, गगन और पवन सिन्धु और वसुन्धरा, स्वर्ग और नरक, जड़ और चेतन, निशा और दिवस, वन और उपवन, सर और सरिता, मिलन और विरह, प्रणय और संघर्ष, आशा और निराशा, जन्म और जीवन, काल और कर्म - सभी जिनका विश्व में महत्त्व है उन पर बेबाक टिप्पणी देकर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करता है। कवि, कवि नहीं बल्कि युग सृष्टा एवं युग दृष्टा भी है। कविवर गोपाल दास नीरज सच्चे अर्थों में एक सशक्त अन्तर्राष्ट्रीय युग दृष्टा एवं युग सृष्टा कविवर हैं।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में अपनी प्रतिभा को उजागर करने वाले कवियों में सबसे अलग और विचित्र पहचान बनाने वाले नीरज जी के समकक्ष कोई ऐसा जीवन्त कवि नहीं है जिसका स्थान सर्वोपरि है। उन्होंने यह पहचान अपनी प्रतिभा भावों और विचारों को संजोकर बनायी है। नीरज जी बहुमुखी प्रतिभा के ऐसे चितेरे कवि हैं जिनके एक-एक गीत में मार्मिकता, देशभक्ति, प्रेम, समर्पण के बीज अंकुरित होते दिखाई देते हैं। गीतों में इतनी सहजता और सरलता की भंगिमा है, मानों सब कुछ सजीव सा प्रतीत होता है। नीरज किसी साधारण व्यक्तित्व का नाम नहीं है बल्कि एक ऐसे युग का नाम है जिनकी अन्तर्राष्ट्रीय कवियों में शीर्षस्थ स्तर पर गणना की जाती है।

नीरज जी मूलतः कवि हैं। वे रस सिद्ध एवं कण्ठ सिद्ध कवि हैं। नीजर जी केवल गीतकार, मुक्तककार, अनुवादक और गीतिकाकार ही नहीं बल्कि उच्च कोटि के सिने-गीतकार हैं। उन्होंने